ब्रिटिश भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

हिंदू धर्म से संबधित सुधारक संस्थाएँ

ब्रह्म समाज

- 1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म सभा की स्थापना कलकत्ता में की, जिसे बाद में 'ब्रह्म समाज' कहा गया। ब्रह्म समाज के मुख्य उद्देश्य हिंदू धर्म में सुधार लाना, सभी धर्मों की अच्छाइयों को अपनाना, मूर्ति पूजा का विरोध, एक ब्रह्म की पूजा का उपदेश देना आदि थे।
- सामाजिक क्षेत्र में राजा राममोहन राय हिंदू समाज की कुरीतियों-सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, वेश्यागमन, जातिवाद, बाल विवाह आदि के घोर विरोधी थें। विधवा पुनर्विवाह का इन्होने समर्थन किया।
- एकेश्वरवादी मत के प्रचार हेतु उन्होनें 1815 में 'आम्मीय सभा' का भी गठन किया। 1822 में फारसी भाषा में उन्होनें मिरात-उल-अखबार का प्रकाशन किया।
- 1821 में बांग्ला भाषा में 'संवाद कौमुदी' का भी प्रकाशन किया। सती-प्रथा के विरोध के लिये इन्होनें अपनी इस पत्रिका का उपयोग किया।
- राजा राममोहन राय ने डच घड़ीसाज डेविड हेयर के सहयोग से 1817 में कलकत्ता में 'हिंदू कालेज 'की स्थापना की। 1825 में उन्होनें कलकत्ता में 'वेदांत कॉलेज' की स्थापना की।
- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि प्रदान की।
- राजा राममोहन राय की मृत्यु 1833 में ब्रिटेन के ब्रिस्टल में हुई।
- राजा राममोहन राय के पश्चात् देवेन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रह्मा समाज का कुशल नेतृत्व प्रदान किया। 1839 में उन्होनें 'तत्वबोधिनी सभा' की स्थापना की।
- ब्रह्मा समाज के विचारों को लेकर 1865 में केशवचंद्र सेन व देवेंद्रनाथ टैगोर के बीच विवाद हुआ, जिसक कारण केशवचंद्र सेन मूल ब्रह्म समाज से अलग हो गए और 1866 में आदि ब्रह्म समाज की स्थापना की। यही बाद में 'भारतीय ब्रह्म समाज' कहलाया।

प्रार्थना समाज

- महाराष्ट्र में 1867 में 'प्रार्थना समाज' की स्थापना हुई। इस संगठन का उद्देश्य हिंदू धर्म तथा समाज में सुधार लाना था।
- 1867 में रानाडे ने सर्वाजिक सभा की स्पापना की । इनकी तीक्ष्ण मेधाशक्ति के कारण इन्हें 'महाराष्ट्र का सुकरात' भी कहा जाता था। उन्होनें अछूतों, दलितों व पीड़ितों की दशा सुधाारने के उद्देश्य से कल्याणकारी संस्थाओं का गठन किया जैसे- विधव आश्रम, रात्रि पाठशालाएँ आदि।
- रानाडे के प्रयत्नों से दक्कन एजुकेशनल सोसाइटी की स्थापना हुई। महिलाओं के कल्याण के लिये 'आर्य महिला समाज' की स्थापना पंडिता रमाबाई ने की थी। रानाडे के शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले

Pareet Yadav Sir

ने **'सवेट्स आफ इंडिया सोसाइटी' की स्थापना की।**

☞ प्रार्थना समाज के सिद्धांत और विचार भी ब्रह्म समाज के अनुरूप ही थे। इसने जाति प्रथा की समाप्ति, विधवाओं के पुनर्विवाह, नारी शिक्षा को बढ़ावा, बाल-विवाह के अंत आदि के पक्ष में प्रभावपूर्ण आवाज उठाई।

आर्य समाज

☞ 1857 में दयानंद सरस्वती ने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की। 1877 में आर्य समाज का मुख्यालय लाहौर में स्थापित किया गया।

☞ दयानंद सरस्वती ने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा देते हुए, वेदो को भारत का आधार स्तंभ बताया। उनका विश्वास था कि हिंदू धर्म व वेद, जिन पर भारत का पुरातन समाज टिका है, वे शाश्वत, अपरिवर्तनशील, धर्मातीत तथा दैवीय है।

☞ आर्य समाज द्वारा चलाया गया 'शुद्धि आंदोलन' काफी विवादास्पद रहा। इसके अंतर्गत किसी कारणवश अन्य धर्म अपनाने वाले हिंदुओं को पुनः हिंदू धर्म मे वापसी के लिये प्रोत्साहित किया गया।

☞ 'स्वदेशी व हिंदी' का समर्थन करने वाला यह प्रथम संगठन था इसका मानना था कि ''भारत भारतीयों के लिये है।''

☞ दयानंद सरस्वती ने 'गो रक्षा आंदोलन' चलाया। गायों की रक्षा हेतु 'गो रक्षा समिति' की स्थापना की।

☞ दयांनद सरस्वती ने सर्वप्रथम 'स्वराज' शब्द का प्रयोग किया तथा हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया।

☞ वेलेटाइन शिरोल ने इस संगठन को 'भारतीय अशांति का जन्मदाता' कहा था।

यंग बंगाल आंदोलन

☞ 19 वी सदी के तृतीय दशक के अंतिम वर्षो में बंगाल के बुद्धिजीवियों के मध्य एक रेडिकल ग्रुप संगठित हुआ, जिसके विचार अधिक क्रांतिकारी थे। इस आंदालेन का 'यंग बंगाल आंदोलन' के नाम से जाना जाता है। बंग बंगाल आंदोलन के प्रवर्तक हेनरी लुइस विवियन डेरोजियो थे।

☞ डेरोजियो फ्राँस की क्राँति से बहुत प्रभावित थे।

☞ समाज सुधार के लिये डेरोजियो ने 'एकेउमिक एसोसिएशन' और 'सोसायटी फॉर द एक्वीजीशन ऑफ जनरल नॉलेज' जैसे संगठनों की स्थापना की।

☞ डेरोजियो ने अपने समर्थकों को सत्य के लिये जीने और मरने, सभी सद्गुणों को अपनाने और उनके अनुसार आचरण करने हेतु प्रोत्साहित किया।

☞ यंग बंगाल आंदोलन के मुख्य मुद्दे-प्रेस की स्वतंत्रता, जमींदारो के अत्याचारों से रैय्यतों की सुरक्षा,

Ranjeet Yadav Sir

सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों को रोजगार दिलाना आदि थें।

☞ सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने डेरोजियों के अनुयायियों को 'बंगाल में आधुनिक सभ्यता के अग्रदूत 'हमारी जाति का पिता' कहा।

☞ डेरोजियों को आधुनिक भारत का 'प्रथम राष्ट्रवादी कवि' की कहा जाता है।

रामकृष्ण मिशन

☞ रामकृष्ण परमहंस के शिष्य विवेकानंद द्वारा रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में कलकत्त के समीप बारानगर में की गई।

☞ स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था।

☞ रामकृष्ण मिशन की शिक्षाओं, उपनिषदों एवं गीता के दर्शन, बुद्ध एवं यीशु के उपदेशों को आधार बनाकर विवेकानंद ने विश्व को मानव मूल्यों की शिक्षा दी।

☞ 1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने भारत का नेतृत्व किया। इस सम्मेलन मे जाने से पूर्व हो नरेद्रनाथ दत्त का नाम बदलकर महाराज खेतड़ी के सुझाव पर स्वामी विवेकानंद रख दिया गया।

☞ विवेकानंद ने शिकागों में संपन्न 'विश्व धर्म सम्मेलन (1893) में सभी धर्मों की एकता के विषय में कहा। उन्होनें अध्यात्मवाद एवं भौतिकतावाद के मध्य संतुलन स्थापित कर कहा कि- ''यदि पश्चिम के भौतिकतावाद एवं पूर्व के अध्यात्मवाद का सम्मिश्रण कर दिया जाए तो यह मानव जाति की भलाई का सवोत्तम मार्ग होगा''।

☞ विवेकानंद का कहना था कि ''धर्म न पुस्तकों में है न बौद्धिक विकास में और न तर्क में तर्क सिद्धांत, पुस्तकें और धार्मिक क्रियाएँ आदि केवल धर्म के सहायक है, धर्म आत्म-ज्ञान में है।

☞ वे जातिवाद, छुआछूत एवं विषमता को राष्ट्रकी दुर्बलता का कारक मानते थे। उन्होंने युवा पीढ़ी से अपील की कि वे प्राचीन सभ्यता पर गर्व करें अपनी संस्कृति को मानव जाति के कल्याणार्थ हेतु समर्पित करे।

☞ विवेकानंद ने कहा कि ''जब तक करोड़ो व्यक्ति भूखे और अज्ञानी ळे तब तक मै उस प्रत्येक व्यक्ति को देश द्रोही मानता हूँ जो उन्हीं के खर्चे पर शिक्षा ग्रहण करता है परंतु उनकी परवाह बिल्कुल नहीं करता।''

☞ स्वामीजी को 19 वी शताब्दी के नव हिदू जागरण का संस्थापक भी कहा जाता है। सुभाष चंद्र बोस ने स्वामी विवेकानंद को ''आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता'' कहा।

☞ स्वामी विवेकानंद ने प्रबुद्ध भारत (अग्रेजी) उद्बोधन (बंगाली) नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। राजयोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग व वेदांत फिलॉसफी उनकी प्रसिद्ध पुस्तके है।

☞ विवेकानंद से प्रभावति होकर एक विदेशी महिला इनके साथ भारत आई जो सिस्टर निवेदिता

Ranjeet Yadav Sir

(मार्गरेट नोबल) के नाम से जानी जाती थी।

थियोसोफिकल सोसायटी

- ☞ थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 मे न्यूयॉर्क में मैडम हेलना पेट्रावना ब्लावात्स्की तथा कर्नल हेनरी स्टली ऑल्कॉट ने की थी।
- ☞ भारत मे 1882 में थियोसोफिकल सोसायटी का अड्यार (मद्रास) मे अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय खोला गया।
- ☞ 1889 में एनी बेसेंट इस सोसायटी की इंग्लैड में सदस्या बनी। वह 1893 में भारत आई और सोसायटी का कार्यभार अपने हाथ में ले ली। भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में इनका अद्भुत योगदान रहा।
- ☞ थियोसॉफी (ब्रह्मविद्या) हिंदू धर्म के आध्यात्मिक दर्शन, उसके धर्म सिद्धातं तथा आत्मा के पुनर्जन्म सिद्धांत का समर्थन करती है।
- ☞ थियोसोफिकल सोसायटी पुनर्जन्म व कर्म के सिद्धांत को मान्यता देती थी। इस संस्थान ने बाल विवाह, जातिवाद का विरोध तथा विधवाओं की दशा सुधारने का प्रयास किया।
- ☞ भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिये एनी बेसेंट 1898 में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की जो 1916 में मदनमोहन मालवीय जी के प्रयासों से 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' बना।
- ☞ एनी बेसेंट ने आयरलैड की होमरूल के नमूने पर भारत मे होमरूल लींग आंदोलन का नेतृव्त किया और 1917 में कॉन्ग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनी।

मुस्लिम धर्म सुधार आंदोलन

अलीगढ़ आंदोलन

- ☞ अलीगढ़ आंदोलन का प्रवर्तन सर सैय्यद अहमद खाँ ने किया तथा इस्लाम में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों- पीरीमुरीदी प्रथा, दास प्रथा इत्यादि के विरूद्ध आवाज उठाई। यह अग्रेजी शिक्षा व ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग के पक्ष में सबसे असरदार आंदोलन रहा।
- ☞ 1864 मे कलकत्ता में सद सैय्यद अहमद खाँ द्वारा 'साइंट्रिफिक सोसाइटी' की स्थापना की गई। इस सोसायटी के कुछ प्रतिष्ठित अंग्रजी पुस्तकों को हिंदी व उर्दू में अनुवाद करना प्रारंभ किया जिससे मुस्लिम समाज पाश्चात्य संस्कृति व विचारों से परिचित हुआ।
- ☞ ब्रिटिश सरकार से संबंध सुधारना एवं मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा का प्रचार करना, सर सैय्यद अहमद खाँ का मुख्य उद्देश्य था। इस दिशा में इन्होंने 1875 में 'मोहम्मडन एंग्लो ओरियंटल स्कूल' की स्थापना अलीगढ़ में की, जो 1920 में 'अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' में परिवर्तित हो गया।
- ☞ सर सैय्यद अहमद खाँ व बनारस के राजा शिव प्रसाद सिंह (सितारे-हिंद) ने कॉन्ग्रेस की स्थापना के विरोध में 'यूनाइटेड इंडियन पैट्रियाँटिक एसोसिएशन' की स्थापना की।

Ranjeet Yadav Sir

☞ अलीगढ़ आंदोलन में उनके सहयोगी चिराग अली, अल्ताफ हुसैन हाली, नजीर अहमद, मौलाना शिवाली नोमानी आदि थे।

☞ सर सैय्यद अहमद की मुख्य पत्रिका-तहजीब-उल-अखलाक (सभ्यता और नैतिकता) थी। इनका एक महत्वपूर्ण कार्य 'कुरान पर टीका' लिखना भी था। इनका मानना था कि हिंदू व मुसलमान दो आँखे है।

☞ इस आंदोलन के समर्थकों की विचारधारा कुरान की उदार व्याख्या पर आधारित थी। इन्होने मुस्लिम समाज मे आधुनिक एंव उदार संस्कृति को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया।

☞ अलीगढ़ आंदोलन का उद्देश्य इस्लमी समाज का आधुनिकरण करना था। इस प्रकार अलीगढ़ आंदोलन तत्कालीन समय में मुस्लिम सांस्कृतिक एवं धार्मिक गतिविधियों का केंद्र बन गया।

दलित सुधार आंदोलन

सत्यशोधक समाज

☞ ज्योतिराव गोविंदराव फूले (ज्योतिबा फूले) ने निम्न जातियों के कल्याण के लिये 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की।

☞ यह प्रथम भारतीय संगठन था जिसने अस्पृश्य वर्ग के लिये स्कूल खुलवाये तथा नारी शिक्षा के लिये पूना में एक कन्या विद्यालय खोला।

☞ ज्योतिबा फूले समाज में जाति प्रथा के पूर्ण उन्मूलन एवं समाजिक-आर्थिक समानता के पक्षधर थ। ज्योजतिबा ने भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के नेताओं की कमजोर वगों के लोगों के हितों की अनदेखी करने के लिये आलोचना की।

☞ ज्योतिबा फूले ने अपनी पुस्तक 'गुलामगिरी' में निम्न जातियों को पांखंडी ब्राह्मणों एवंउनके अवसरवादी धर्म ग्रंथां से सुरक्षा दिलाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

डॉ. भीमराव अंबेडकर

☞ इनका जन्म 1891 में मध्य प्रदेश के महू जिले में एक अस्पृश्य जाति महार में हुआ था।

☞ 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का निर्माण किया, जिसका उद्देश्य अस्पृश्य लोगों की भौमिक एवं नैमिक उन्नति करना था।

☞ 1930 में अंबेडकर ने राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश किया। उन्होने अछूतों के लिये अलग मताधिकार मांगा। उनकों लंदन में हुई तीनों गोलमेज सम्मेलनों (1930-32) में अछूतों के प्रतिनिधि के रूप में बुंलाया गया था।

☞ इन्होने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में निम्न जातियों के लिये पृथक् निर्वाचन प्रणाली की बात की जिसे मान लिया गया तथा ब्रिटिश प्रधानमंत्री द्वारा सांप्रदायिक निर्णय दिया गया। इससे दु:खी होकर गांध

Ranjeet Yadav Sir

ीजी ने आमरण अनशन आरंभ कर दिया। अंत में 1932 में 'पूना समझौता' के साथ उपवास समाप्त किया।

☞ 1942 में अफल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास फेडरेशन की स्थापना की।

☞ संविधान सभा मे प्रारूप समिति के अध्यक्ष बने और बाद में बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।

सती प्रथा

☞ लॉर्ड विलियम बेंटिक के समय में 1829 में सती प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया गया।

☞ प्रारंभ में इसे बंगाल में लागू किया गया। इस अधिनियम को पारित कराने में राजा राममोहन राय की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सामाजिक सुधार हेतु उठाये गए कदम

बाल विवाह

ब्रिटिश सरकार ने बाल विवाह को प्रतिबंधित करने के लिये तीन अधिनियम पारित किये-

(i) सिविल मैरिज एक्ट या नेटिव मैरिज एक्ट, 1872

इस अधिनियम के द्वारा लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु 14 वर्ष तथा लड़कों की 18 वर्ष कर दी गई। इस एक्ट द्वारा बहुविवाह प्रथा को समाप्त कर दिया गया।

(ii) सम्मति आयु अधिनियम, 1891

(a) यह अधिनियम प्रसिद्ध भारतीय समाज सुधारक एवं बंबई के पारसी बहरामजी मालावारी के प्रयत्न से पारित हुआ। इसे 1891 में सम्मति आयु एक्ट काउंसिल द्वारा पारित कर दिया गया।

(b) इस अधिनियम के द्वारा लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु 12 वर्ष कर दी गई। बाल गंगाधर तिलक ने इस अधिनियम का विरोध किया।

(iii) बाल विवाह निरोधक अधिनियम, 1929 (शारदा एक्ट)

इस अधिनियम द्वारा विवाह की न्यूनतम आयु लड़कियों की 14 तथा लडकों की 18 वर्ष ि नर्धारित की गई

विधवा पुनर्विवाह आंदोलन

1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम

☞ 1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम लॉर्ड कैनिग के समय में 1856 में पारित हुआ।

☞ इसे पारित करवाने में ईश्वर चंद्र विद्यासागर की मुख्य भूमिका रही। इस अधिनियम के तहत विध वाओं के पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान कर दी गई?

दास प्रथा

☞ गवर्नर जनरल लॉर्ड एलनबरो ने 1843 में भारत में दास प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया।

Ranjeet Yadav Sir

☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व

Ranjeet Yadav Sir

☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व
☞ 2व

Ranjeet Yadav Sir

Ranjeet Yadav Sir